

डा० शुचि अग्रवाल
संस्कृत विभाग
एस० डी० कॉलेज, मु० नगर

काव्य-प्रकाश (चतुर्थ-उल्लास)

रस-सिद्धान्त

— x —

रस-सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए भरत ने एक रस-सूत्र प्रस्तुत किया -

"विभावानुभावव्यभिचारी संयोगाद् रस निष्पत्तिः।"

भरत के इस रस-सूत्र की अनेक काव्याचार्यों ने व्याख्या की। इसमें भट्ट लोकम्ह, भट्ट शङ्कर, भट्ट नायक और अभिनव गुप्त मुख्य रूप से उल्लेखनीय हैं।

अभिनव गुप्त का रस सिद्धान्त :- 'समिव्यक्तिवाद' के प्रवर्तक आचार्य अभिनवगुप्त एक आलंकारिक आचार्य हैं। उन्होंने अपने सिद्धान्त का केन्द्र बिन्दु सामाजिक अनुभूति को माना है।

उनके अनुसार मूल मनः संवेग अर्थात् वासना या संस्कार रूप में रति आदि स्थायिभाव सामाजिक की आत्मा में स्थित रहता है। वह साधारणीकृत रूप से उपास्थित विभावार्थ-सामग्री से अभिव्यक्त या उद्बुद्ध हो जाता है और तन्मयी भाव के कारण वेदान्तर के सम्पर्क से रस्य ब्रह्मास्वाद के सदृश परमानन्द में अचभूत होता है।

मम्मट के अनुसार :- 'लोके प्रमदादिभिः स्थाय्यनुमानेऽभ्यासपाटवतां काव्ये नाट्ये च तैरेव कारणत्वाविपरिहारेण विभावनादिव्यापारवत्त्वाद् अलौकिकविभावविशब्दव्यवहार्यैर्ममैवेति, शत्रोरेवैतोत्तरस्थस्यैवेति, न ममैवेति, न शत्रोरेवेति, न ताटस्थस्यैवेति, इति - - - - - विभावार्थजीवितावधिः, पानकरमन्यायेन चर्वमाणः पुर बव परिस्फुरन्, हृदयमिव प्रविशन्, सवङ्गीणामिवालिङ्गन्, अन्यत्सर्वमिव तीरोद्घट्, ब्रह्मास्वादमिवानुभावयन्, अलौकिकचमत्कारकारी हेङ्गार शुङ्गारादिको रसः।'

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्तःकरण में लौकिक अनुभाव से उद्भूत रति आदि भावनाएं पहले से ही निरन्तर विद्यमान होती हैं। अभिनव प्रदर्शन या काव्य श्रवण के समय उनके द्वारा हमें ऐसे विभाव तथा अनुभाव

आदि का अनुभव होने लगता है, जो अन्तःकरण के अनुकूल होने के कारण बहुत सुन्दर प्रतीत होने लगता है। इस समय हमारी रत्यादि सहज भावनायें उत्भूत हो जाती हैं। इस प्रकार सामाजिक के कोमल हृदय में एक प्रकार की आनन्दानुभूति होने लगती है। इसी आनन्दानुभूति को 'रस' कहते हैं। यह रस अनुभाव, विभाव आदि से वैसे ही विलक्षण होता है, जैसे - इलायची, मिर्च, चीनी, कपूरादि से निर्मित 'पानक रस' इलायची आदि के रस से विलक्षण होता है। यह हृदय में प्रविष्ट होता हुआ सा, समस्त अङ्गों का आविर्भूत करता हुआ सा, अन्य सब को तिरोभूत करता हुआ सा, ब्रह्मसाक्षात्कार का अनुभव करता हुआ सा, आलौकिक आनन्द प्रदान करने वाला होता है।

रस की आलौकिकता :-

आनन्द गुप्त के अनुसार रस अलौकिक है क्योंकि कि-

① रस को न तो कार्य कहा जा सकता है और न ज्ञाप्य। क्योंकि रस कार्य के समान अपने प्रेरित कारण विभाव आदि के नष्ट हो जाने पर नहीं विद्यमान रहता है। इसी प्रकार रस ज्ञाप्य भी नहीं है क्योंकि 'ज्ञाप्य' चार्थ ज्ञान होने से पूर्व रस विद्यमान रहता है और बाद में भी। परन्तु रस की सत्ता न अनुभव से पूर्व काल में रहती है और न अनुभव के बाद।

“स च न कार्यः, विभावानाशोऽपि तस्य सम्भवः प्रसङ्गात्। नापि ज्ञाप्यः। न हि तस्य तस्यासम्भवात्। अपि तु विभावानिर्भव्याऽजितश्चर्वणीयः।।”

② इसी प्रकार न रस का कोई कार्य देव ही है और न ही कोई ज्ञापक देव। क्योंकि न वह कार्य है और न ज्ञाप्य।

③ आनन्दगुप्त कहते हैं कि इसका ग्रहण न सविकल्पक ज्ञान से हो सकता है और न निर्विकल्पक ज्ञान से, अतः यह अलौकिक है।